२५/११/२२ ~~३२/६/२०~~

B.A Part III
Hindi Hons
सगुण भक्ति काव्य

(1)

डॉ० अवधेश कुमार
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
एस०एस० कॉलेज,
जहानाबाद

सूर का वात्सल्य वर्णन, क्रमशः—

~~सूरदास तथा अभिव्यक्ति करें~~ ।

खेलन को मेरे दूर गयो ।
संग-संग बलराम है ये बहुत अबेर भयो ॥

जब कृष्ण आते हैं तब यशोदा कहती है कि तुम दूर मत खेलने जाया करो। जानते हो आज गाँव में हाऊ आया है —

खेलन दूर जात कित कान्हा।
आज सुन्यो बन हाऊ आयो तुम नहिं जानत कान्हा॥

कृष्ण भक्ति वात्सल्य को हम दो भागों में बाँट सकते हैं - संयोग और वियोग। अक्रूर के ■ आगमन के पूर्व का संयोग वात्सल्य के अन्तर्गत आता है और अक्रूर के साथ कृष्ण को मथुरा जाने के तथा उसके बाद का भाग वियोग वात्सल्य के अन्तर्गत आता है।

यशोदा के सामने अक्रूर के साथ मथुरा जा रहे हैं। यशोदा रो रही है, कलप रही है, सिसक रही है। उसकी छाती फट रही है। वह सब कुछ देने को तैयार है पर चाहती है कि मेरा कृष्ण मेरी आँखों के सामने रहे —

इतने ही सुख कमल नयन को अखियन आगे देखौं ।

यशोदा की इस स्थिति को करुणा, दीनता, विवशता इत्यादि अपने उत्कर्ष पर है जो अपने आप में एक मिसाल है।

नन्द और यशोदा कृष्ण के वियोग में पागल से हो गये हैं। वे कान्ह-कान्ह की रट लगाते आँखों से आँसू बहा रहे हैं —

नन्द जसोदा मारग जोहत नित उठि साँझ सवेरे।
चहुँ दिसि कान्ह-कान्ह कहि टेरत अंसुवन बहत पनारे॥

कृष्ण के लिए बलराम की माता रोहिणी भी रो रही है —

ये दोउ मैया ब्रज के जीवन कहत रोहिणी रोई।

क्रमशः—